NH Debate – 45

“नहर नहीं, तालाबों की जरूरत है हरियाणा को”

सतलुज और यमुना जोड़-नहर के बारे में हरियाणा और पंजाब के बीच बहुत राजनीति हो गयी है. कायदे से इसके तकनीकी पक्षों की पड़ताल की जाये तो पता चलता है कि दो नदियों को आपस में नहीं जोड़ा जा रहा बल्कि सतलुज से निकली नहर का पानी यमुना से सिंचित इलाके में लाने के लिये एक नहर बनाई गयी थी जिसमे आज तक पानी नहीं बहा.

जरूरत भी नहीं थी इसकी. इसलिये कि, हमारे पुरखों ने सूखा और अल्प- वृष्टि से मुकाबला करने के लिये छोटे-बड़े कुछ सौ नहीं बल्कि कुछ हज़ार तालाबों का निर्माण किया था. इनमें से कुछ तो प्रतिवर्ष और कुछ दूसरे-तीसरे वर्ष सूख जाते थे. कुदरत तब इन्हें सारने, संभालने का मौक़ा देती थी. सारा समाज एकजुट होकर तसले, टोकरी और कस्सी या कुदालें लेकर सरोवर, जोहड़, डाबड़ा, डोभी, पोखर, तालाब, पुष्कर्णी और तड़ागों की गाद निकालने के लिये तड़के और सांझ, दो वक़्त जुटता था. 'ज़ूल' काढी जाती थी. यह जूल शब्द मुझे तो पचपन से ही पता चल गया था क्योंकि जेठ माह की किसी सांझ को ढिंढोरे वाला आता था और जोर-जोर से कहता कि 'कल सुबह अमुक तालाब या जोहड़ की गाद निकालने का काम शुरू होना है, सब सुनियो और छंटाई करने पहुंचियो रे..रे....रे.' में भी छोटी टोकरी लेकर बड़ों के साथ 'डिठा' वाले जोहड़ पर पहुँच जाता. असली नाम था 'देवता वाला' अर्थात जिसे कुदरत ने खुद बनाया हो लेकिन इंसान ने इसकी 'पाल' लगा दी. और गहरा किया तो पाल ऊंची भी हो गयी और पहले से अधिक पानी रोकने का इंतजाम हो गया. इसमें पानी तो अभी तक आता है लेकिन अब इसका रूप-रंग विकृत हो गया है. सब हरे-भरे पेड़ पाल से गायब हो गये हैं. आदि-आदि, क्योंकि किस्से बड़ा है.

'गाद' कोई अनुपयोगी या अवांछित वस्तु अथवा मल नहीं थी बल्कि इसकी दर्जनों उपयोग समाज ने ढूंढ निकाले थे. नहरें आने से तालाबों की ओर से समाज का ध्यान हटा दिया गया. तालाब मरने लगे और नहरों निकालने की मांग बढने लगी.

खेती के कारण नहरी जल पर निर्भरता बड़ी तो गाँव और नगरों के बीच एक तरह का विवाद और प्रतिस्पर्धा भी इसके पानी के बंटवारे को लेकर बड़ी. जब नहर में पानी नहीं बहता या देरी से आने लगा तो दोनों जगह हाहाकार मचना आरंभ हो गया. इसलिये मेरा मानना है की अधिक नहरें निकालना प्रकृति में एक अनुकूल स्थिती नहीं बनाता. समाज माय इससे रोष ही उत्पन्न हुआ है. लेकिन ऐसे ही मुद्दों की बिनाह पर राजनेता अपनी रोजी-रोटी चलाते हैं. सार्वजानिक मंचों और मीडिया

के जरिये प्रतिपक्ष पर खूब आग उगलते हैं लेकिन रात के अंधेरे में साथ बैठकर ठट्ठा मरते हैं कि 'लोंगों' को खूब मूर्ख बनाया. साथ में दारू के जाम खनकते हैं. मेरा मानना है कि हरियाणा का दक्षिणी, मध्य या उत्तरी, कोई भी और क्षेत्र हो नहरी पानी का लालच छोड़कर तुरंत बचे-खुचे सरोवरों की सार-संभाल में समाज को जुट हो जाना चाहिये. इसी से स्वावलंबन की पुनर्प्रतिष्ठा होगी.

Ranbir Singh Phaugat

Nidana Heights

Dated: 14/09/14